नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

६

बादलों के पार



रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

६

बादलों के पार

अनुवादक:
अचला जैन

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५





हमारे साहसी यात्रियों को पता भी नहीं चला कि कैसे ग़ुब्बारा लहराता हुआ ज़मीन से ऊपर उठ गया। एक ही मिनट बाद उन्होंने झाबे से झांका तो नीचे दोस्तों की भीड़ दिखायी दी, जो हाथ हिला-हिलाकर उन लोगों को विदाई दे रहे थे और टोपियां ऊपर उछाल रहे थे। नीचे से "हुर्रा" की आवाज़ें आ रही थीं।

"टा-टा!" जानू और उसके दोस्त जवाब में चिल्लाये।

वे भी टोपियां हिलाने लगे। भुलक्कड़ ने टोपी उतारने के लिये सिर की ओर हाथ बढ़ाया तो उसे पता चला कि टोपी तो है ही नहीं।

"भाइयो, रुक जाओ!" उसने चिल्लाकर कहा, "ग़ुब्बारा रोको! मैं टोपी घर भूल आया!"

"तुम हमेशा कुछ न कुछ भूल जाते हो!" श्रीमान बड़बड़िया बड़बड़ाया।

"ग़ुब्बारा तो अब रोका नहीं जा सकता," जानू ने कहा, "अब तो वह तब तक उड़ेगा जब तक उसकी हवा ठंडी नहीं हो जाती।"

"यह क्या बात हुई ! मुझे बिना टोपी के उड़ना पड़ेगा ?" नाराज़ होकर भुलक्कड़ ने पूछा।

"तुम्हें तो अपनी टोपी खाट के नीचे मिल गयी थी," गुलगुला ने कहा।

"हां, मिल तो गयी थी, पर मुझे उसमें गर्मी लग रही थी, इसलिए मैंने उसे मेज़ पर रख दिया था, और ऐन वक़्त पर पहनना भूल गया।"

"तुम ऐन वक़्त पर हमेशा कुछ न कुछ भूल जाते हो," श्रीमान बड़बड़िया ने कहा।

"भाइयो, देखो !" अचानक नजानू ने चिल्लाकर कहा, "हमारा घर नीचे रह गया !"

सभी लोग हंस पड़े और श्रीमान बड़बड़िया ने कहा :

"और क्या ! तुमने सोचा था कि घर भी हमारे साथ उड़ेगा ?"

"मैंने ऐसा कुछ भी नहीं सोचा था," नजानू नाराज़ हो गया, "बस मैंने देखा कि हमारा घर खड़ा है, सो वही मैंने कह दिया। पहले हम लोग घर में रहते थे और अब गुब्बारे में उड़ रहे हैं।"

"हां, उड़ रहे हैं," श्रीमान बड़बड़िया ने बड़बड़ाकर कहा, "न जाने कहां उड़ जायेंगे !"

"तुम, श्रीमान बड़बड़िया, हमेशा बड़बड़ाते रहते हो," नजानू ने कहा, "तुम्हारी वजह से उड़न-गुब्बारे तक में शांति नहीं है।"

"अगर तुम्हें अच्छा नहीं लगता तो तुम चले जाओ !"

"अब मैं कहां जाऊंगा !"

"बस, बस !" लड़नेवालों से जानू ने चिल्लाकर कहा, "उड़न-गुब्बारे में अब यह क्या लड़ाई-झगड़ा मचा रखा है ?"

गुब्बारा ऊपर ही ऊपर उठता जा रहा था। सारा फूल-नगर जैसे हथेली पर दिखायी दे रहा था। घर बिल्कुल छोटे-छोटे लग रहे थे, और बौने तो अब दिखायी ही नहीं दे रहे थे। गुब्बारा हवा के साथ-साथ उड़ रहा था, और जल्दी ही पूरा नगर दूर कहीं पीछे छूट गया।

जानू ने जेब से क़ुतुबनुमा निकाला और उसमें गुब्बारे के उड़ने की दिशा देखने लगा।

क़ुतुबनुमा धातु की बनी एक छोटी सी डिबिया होती है, जिसमें चुंबकीय सूई लगी होती है। यह सूई हमेशा उत्तर की ओर रहती है। अगर इस सूई पर नज़र रखी जाये तो वापस लौटने का रास्ता हमेशा ढूंढा जा सकता है। इसीलिये जानू ने अपने साथ क़ुतुबनुमा ले लिया था।



"हवा हमको सीधे उत्तर की ओर ले जा रही है," जानू ने कहा, "मतलब, लौटते समय दक्षिण की ओर चलना होगा।"

गुब्बारा आसमान में उठ गया था और खेतों के ऊपर उड़ रहा था। नगर कहीं दूर रह गया था। नीचे पतले-से फ़ीते जैसी नदी बह रही थी, जिसे बौने खीरेवाली नदी कहते थे। खेतों में खड़े पेड़ बिल्कुल छोटी-छोटी रोएंदार झाड़ियों जैसे लग रहे थे।

अचानक गुलगुला ने नीचे एक छोटा-सा काला बिंदु देखा। वह ज़मीन पर जल्दी-जल्दी चल रहा था, गुब्बारे के पीछे-पीछे भाग रहा था।

"देखो, भाइयो, कोई हमारे पीछे भाग रहा है," गुलगुला ने चिल्लाकर कहा।

सभी बिंदु को देखने लगे।

"देखो, कूदकर नदी पार कर गया!" भुलक्कड़ चिल्लाया।

"क्या हो सकता है यह?" जल्दबाज़ ने पूछा, "देखो, पेड़ों को ऊपर से फांद रहा है!"

गुब्बारा जंगल के ऊपर उड़ने लगा। बिंदु भी पेड़ों की फुनगियों पर चल रहा था।



डाक्टर टिकियावाला ने अपनी नाक पर चश्मा चढ़ा लिया, फिर भी देख नहीं सका कि वह था क्या।

"मुझे मालूम है!" अचानक नजानू ने चिल्लाकर कहा, "सबसे पहले मेरी समझ में आया! यह हमारा गुर्रा है। हम लोग उसे लेना जो भूल गये, अब वही हमारे पीछे भाग रहा है।"

"तुम भी अजब चीज़ हो!" गोलीबाज़ ने उत्तर दिया, "गुर्रा तो यहां है। वह देखो मेरी बेंच के नीचे बैठा है।"

"फिर यह है क्या? शायद तुम बता सको, जानू?" कदाचित् ने पूछा।

जानू ने क़ुतुबनुमा जेब में रख लिया और नीचे झांककर देखा।

"अरे, यह तो हमारी परछाईं है!" वह हंस पड़ा।

"हमारी परछाईं?" नजानू आश्चर्य में पड़ गया।

"बहुत सीधी-सी बात है। यह गुब्बारे की परछाईं है। हम लोग हवा में उड़ रहे हैं और परछाईं ज़मीन पर भाग रही है।"

छुटके देर तक परछाईं देखते रहे। वह लगातार छोटी होती जा रही थी। आख़िर में वह बिल्कुल ही ग़ायब हो गयी।

"कहां ग़ायब हो गयी परछाईं?" सभी चिंता में पड़ गये।

"हम लोग बहुत ऊपर आ गये हैं," जानू ने समझाया, "अब परछाईं देखी नहीं जा सकती।"

"अजीब बात है," श्रीमान बड़बड़िया मन ही मन बड़बड़ाया। "अपनी परछाईं भी नहीं देख सकते हम लोग।"

"तुम फिर बड़बड़ाने लगे," नजानू ने कहा। "तुम्हारे साथ कहीं भी शांति नहीं है।"

"शांति, शांति!" श्रीमान बड़बड़िया ने उसकी नक़ल उतारते हुए कहा, "गुब्बारे में कैसी शांति! शांति चाहिये तो घर बैठो!"

"तुम ही जो जाकर घर बैठो!"

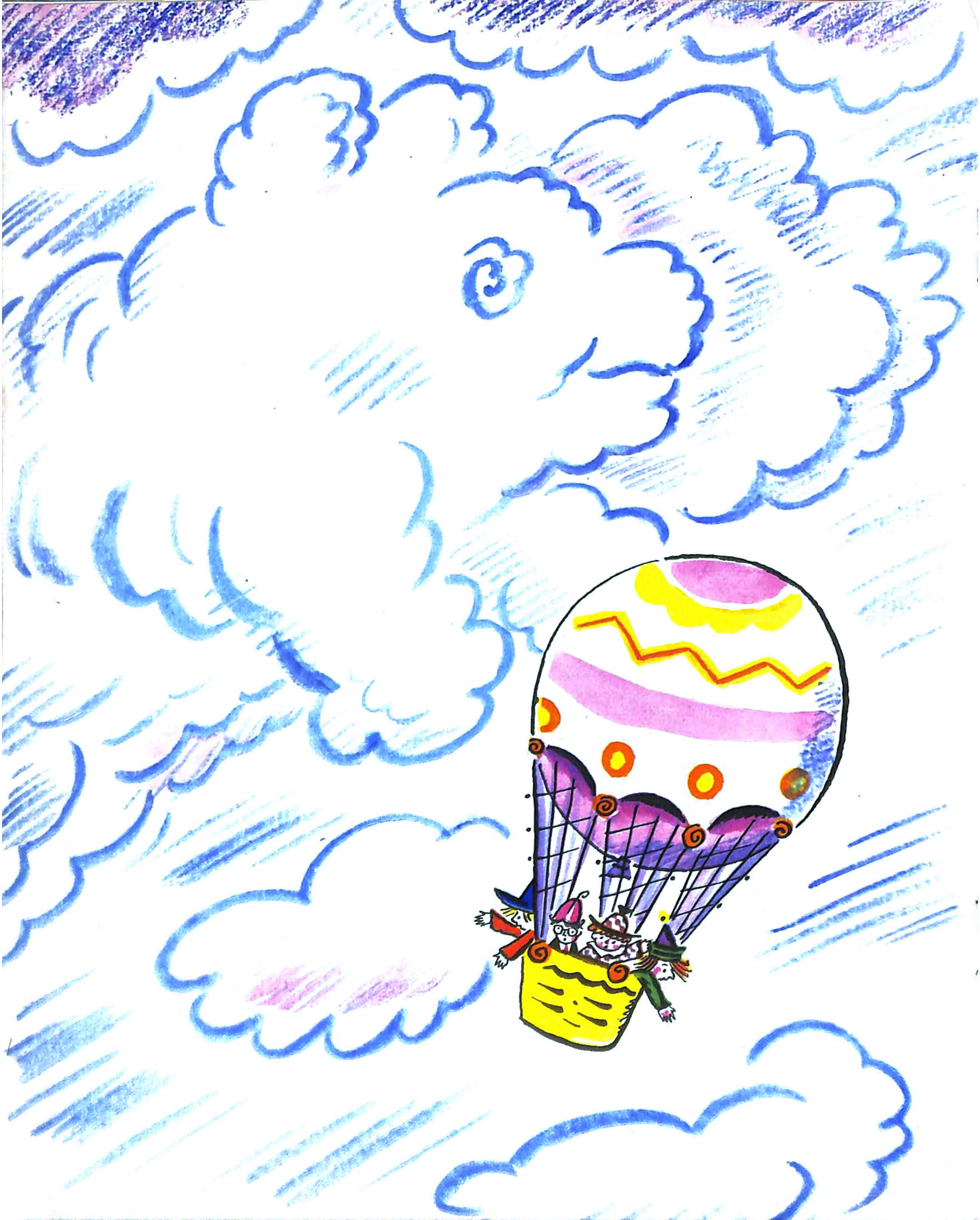
"मुझे तो शांति नहीं चाहिये!"

"तुम लोग फिर लड़ने लगे!" जानू ने कहा। "तुम लोगों को ज़मीन पर छोड़कर आना पड़ेगा।"

श्रीमान बड़बड़िया और नजानू डर गये और उन्होंने लड़ना बंद कर दिया।

इसी समय गुब्बारा धुएं या कोहरे में घुस गया। नीचे ज़मीन ग़ायब हो गयी। चारों ओर जैसे सफ़ेद पर्दा-सा तन गया।

"यह क्या है?" सभी चिल्ला पड़े। "यहां धुआं कहां से आ गया?"



"यह धुआं नहीं है," जानू ने कहा, "यह बादल है। हम बादलों तक उड़ आये हैं और अब बादलों के बीच में उड़ रहे हैं।"

"यह तो तुम अपने मन से गढ़ रहे हो," नजानू ने कहा। "बादल तो लेई जैसे होते हैं। यह तो कुछ कोहरा-सा है।"

"तुम क्या सोचते हो, बादल किस चीज़ के बने होते हैं?" जानू ने पूछा। "बादल भी तो कोहरे से ही बनते हैं। बस दूर से देखने पर ही घने लगते हैं वे।"

पर नजानू को उसकी बात पर विश्वास नहीं आया। वह बोला :

"भाइयो, तुम लोग इसकी बात मत सुनो। यह सब इसकी मनगढ़ंत है, बस यह दिखाना चाहता है कि बहुत कुछ जानता है। सच तो यह है कि इसे कुछ भी नहीं मालूम। जैसे मैं इसकी बात मान ही लूंगा कि बादल कोहरा होता है! बादल तो लेई की तरह होता है। जैसे मैंने लेई कभी देखी ही न हो!"

जल्दी ही गुब्बारा ऊपर उठ गया, बादलों से बाहर निकलकर उनके पार उड़ने लगा।

नजानू ने झाबे से झांककर देखा तो नीचे बादल दिखाई पड़े, जिन्होंने ज़मीन ढंक रखी थी।

"अरे बाप रे!" नजानू चिल्ला पड़ा, "आसमान नीचे है! हम लोग औंधे उड़ रहे हैं!"

"औंधे क्यों?" सभी आश्चर्य में पड़ गये।

"देखो, हमारे पैरों के नीचे आसमान है – मतलब हम औंधे उड़ रहे हैं।"

"हम लोग बादलों के ऊपर उड़ रहे हैं," जानू ने समझाया। "हम लोग बादलों से ऊपर निकल आये हैं, इसलिये बादल अब हम लोगों के ऊपर नहीं बल्कि नीचे हैं।"

पर नजानू ने इस पर भी विश्वास नहीं किया है। वह अपनी जगह बैठा रहा और सिर पर अपनी टोपी कसकर पकड़े रहा। उसने सोचा कि अगर उसके पैर ऊपर हैं तो टोपी सिर पर से गिर सकती है। बादलों के ऊपर हवा गुब्बारे को तेज़ी से खींच रही थी, पर जल्दी ही सबने महसूस किया कि गुब्बारा नीचे उतरने लगा है।

"हम नीचे क्यों उतरने लगे?" छुटके चिंता में पड़ गये।

"गुब्बारे की हवा ठंडी होने लगी है," जानू ने समझाया।

"मतलब, अब हम लोग ज़मीन पर उतर रहे हैं?" जल्दबाज़ ने पूछा।

"हमने रेत से भरे बोरे क्यों लिये थे?" जानू ने कहा। "झाबे से रेत नीचे फेंक देंगे, तो फिर ऊपर की ओर उड़ने लगेंगे।"

कदाचित् ने जल्दी से रेत भरा बोरा उठाया और नीचे फेंक दिया।



"अरे, यह तुम क्या कर रहे हो?" जानू ने चिल्लाकर कहा, "भला कहीं पूरा बोरा फेंका जाता है? वह तो किसी का सिर भी फोड़ सकता है!"

"शायद नहीं फोड़ेगा," कदाचित् ने कहा।

"शायद नहीं फोड़ेगा!" जानू ने उसकी नक़ल उतारते हुए कहा, "बोरे को खोलकर उसमें से धीरे-धीरे रेत गिरानी चाहिये।"

"अभी मैं फेंकता हूं," शक्कू ने कहा।

उसने एक और बोरा खोल दिया और सारी रेत झाबे में ही बिखेर दी।

"एक से एक बढ़कर समझदार हैं!" जानू ने सिर हिलाकर कहा। "यह क्या समझदारी की बात हुई कि रेत झाबे में ही रह जाये? इससे तो ग़ुब्बारा हल्का होगा नहीं।"

"अच्छा, मैं अभी रेत नीचे फेंकता हूं" शक्कू ने कहा और मुट्ठी भर-भरकर रेत झाबे से बाहर फेंकने लगा।

"सावधानी से!" भुलक्कड़ चिल्लाया। "तुम तो मेरी आंखें ही अंधी कर दोगे!"

"अच्छा, मैं तुम्हारी आंखें अंधी नहीं करूंगा," शक्कू ने कहा और यह कहते-कहते भी उसकी आंखों में रेत भर दी।

सब लोग शक्कू को डांटने लगे और कदाचित् ने चाक़ू लेकर झाबे की तली में बड़ा-सा छेद कर दिया, जिससे रेत बाहर निकल सके। जानू ने देख लिया और चिल्ला पड़ा:

"रुको! यह तुम क्या कर रहे हो? तुम्हारी वजह से तो झाबा ही टूट जायेगा और हम सभी उसमें से गिर जायेंगे।"

"शायद न भी टूटे," कदाचित् ने कहा।

"तुम दोनों बस 'शायद' और 'अच्छा' ही कहना जानते हो," जानू ने कहा और कदाचित् से चाक़ू छीन लिया।

छेद के रास्ते रेत झाबे से निकल गयी, ग़ुब्बारा हल्का हो गया और फिर से ऊपर उठ गया। छुटके ख़ुश होकर झाबे से बाहर झांकने लगे। सभी ख़ुश थे कि ग़ुब्बारा फिर से ऊपर की ओर उड़ने लगा। बस श्रीमान बड़बड़िया जो हमेशा किसी न किसी बात से नाख़ुश रहता था, बड़बड़ाता रहा:

"यह क्या बात हुई? कभी ऊपर, कभी नीचे! ग़ुब्बारे क्या ऐसे ही उड़ते हैं?"

फिर समझ में न आने पर कि और क्या कहा जाये, उसने गुलगुला की ओर देखा, जो चुपचाप चीनी का डला कुतर रहा था:

“और यह तुम क्या कुतर रहे हो?”

“मेरी जेब में चीनी का डला है, मैं उसे जेब से निकालकर खा रहा हूं।”

“खूब समय ढूंढ निकाला है चीनी खाने का! अभी नीचे उतर जायें तब खाना।”

“मैं फ़ालतू बोझ क्यों ढोता फिरूं?” गुलगुला ने कहा। “मैं चीनी खा लूंगा तो ग़ुब्बारा हल्का हो जायेगा, और ऊपर उठने लगेगा।”

“ठीक है, खा लो! देखते हैं क्या होगा तुम्हारे कुतरने से!” श्रीमान बड़बड़िया ने कहा।



Н. Носов

НАД ОБЛАКАМИ

На языке хинди

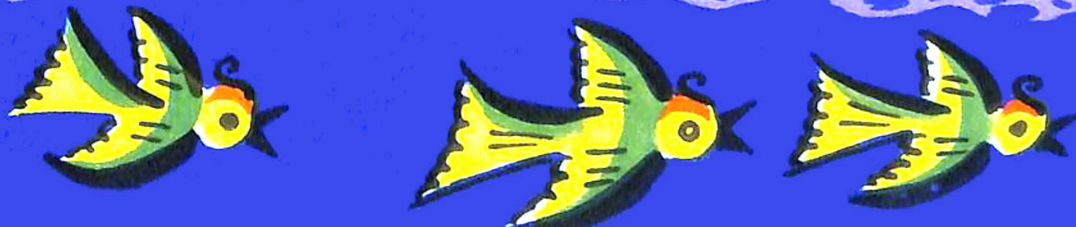
N. Nosov

UP IN THE CLOUDS

in Hindi



सोवियत संघ में प्रकाशित





सोवियत संघ में प्रकाशित

अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इन पुस्तकों में पढ़ सकते हैं:

'और फट गया गुब्बारा ...' तथा 'अपरिचितों के बीच'।

ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-000985-5